Raaj Booj

144

समाज विकासमाला

राजा भोज

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

ರಾಜಾ ಭೋಜ 1607

समाज-विकास-माला : ४७

GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162, RAMAVILAS ROAD
MYSORE-1

राजा भोज

दान, दया और चतुराई की सुंदर कहानियां

ಗಾಂಧಿ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ
ಮೈಸೂರು
ನಂ. 574 144
ತತ್ವ ಪ್ರಚಾರ ಶಾಖೆ

लेखक
देवराज 'दिनेश'

संपादक
यशपाल जैन

ಕರ್ನಾಟಕ ಗಾಂಧೀ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ (ರಿ)
ಪರಿಗ್ರಹಣ ಸಂಖ್ಯೆ:
ACC. No.: 9649
ಗಾಂಧೀ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

तीसरी बार : १९५८
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

1667
GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162, RAMAVILAS ROAD
MYSORE-1

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जब से ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय, और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

तीसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का तीसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री

पाठकों से

राजा भोज का नाम आपने सुना होगा, उनकी कहानियां भी पढ़ी या सुनी होंगी। वह ऊंचे दर्जे के राजा थे। अपनी प्रजा की भलाई का बराबर ध्यान रखते थे, उसके हित के काम करते थे। किसीको कोई कष्ट न हो, कोई सरकारी कर्मचारी किसीको सतावे नहीं, इसलिए वह भेस बदलकर इधर-उधर घूमते रहते थे, सबपर कड़ी निगाह रखते थे।

वह बड़े ही खुलेहाथ थे। दान इतना देते थे कि सुनकर अचरज होता है। जिससे खुश होते थे उसे निहाल कर देते थे। उनके सामने कोई भी पहुंच सकता था। छोटे-बड़े के बीच वह भेद नहीं करते थे।

इस पुस्तक में इसी उदार राजा की कई रोचक कहानियां हैं। उन्हें पढ़कर आपको बड़ा हर्ष होगा और आपका खूब मनोरंजन होगा।

—संपादक

राजा भोज

एक दिन राजा भोज अपने दरबार में बैठे हुए थे। दूत ने आकर उन्हें बताया, "महाराज, एक पंडितजी आपसे मिलने आ रहे हैं। उनके साथ उनका परिवार भी है। क्या आज्ञा है?"

महाराज ने एक बार अपनी राजसभा को देखा, फिर दूत से बोले, "ऐसा करो, एक लोटे में किनारों तक दूध भर लो। उसे ब्राह्मण के पास ले जाओ और कहो कि महाराज ने इसका उत्तर मांगा है।"

दूत ने ऐसा ही किया। इस घटना से एक बार तो पंडितजी चकित रह गये, फिर कुछ सोचकर अपने बेटे की बहू से बोले, "बेटी, थोड़ी-सी चीनी देना।" वह चीनी उन्होंने दूध में मिला दी और लोटा लौटा दिया।

दूत वापस महाराज के पास पहुंचा। ब्राह्मण का उत्तर पाकर महाराज बहुत खुश हुए। मंत्री से बोले, "पंडितजी विद्वान हैं। वह हमारी सभा में रहेंगे।"

इस कहानी का मतलब समझे आप? महाराज

ने किनारों तक भरे दूध का जो लोटा भेंजा था उसका मतलब था मेरी सभा में बहुत विद्वान हैं। श्रौर किसीके लिए जगह नहीं है।

ब्राह्मण ने उस भरे लोटे में चीनी डालकर जवाब दिया, "चीनी दूध में घुल जाती है। मैं भी श्रापकी सभा के विद्वानों में घुलमिल जाऊंगा। मेरे कारण श्रापके दरबार में मिठास श्रायगी।"

महाराज ने श्राज्ञा तो दे दी, लेकिन उनका मन न भरा। वह श्रौर परीक्षा लेना चाहते थे। वह लकड़हारे का रूप रखकर श्रागे जाकर ब्राह्मण के साथ हो लिये। सूरज डूब चुका था। वह परिवार तालाब के किनारे एक पेड़ के नीचे ठहर गया। लकड़-हारा बने हुए राजा ने श्रपना बोझ भी वहीं रख दिया।

ब्राह्मण ने पूछा, "क्यों भाई, क्या तुम भी यहीं रहोगे ?

लकड़हारे ने जवाब दिया, "हां बाबा, रात हो रही है। इस समय मेरी लकड़ियां कौन खरीदेगा ? सुबह जाकर बेच दूंगा।"

रात को वे सब खुले जंगल में सो रहे थे। जानवरों का डर तो था ही, इसलिए उन चारों ने बारी-बारी

से जागकर पहरा देने का फैसला किया। सबसे पहले ब्राह्मण का पहरा शुरू हुआ। उसकी पत्नी, उसका बेटा और बेटे की बहू, ये तीनों सो गये।

लकड़हारा भी जाग रहा था। कुछ देर बाद उसने एक श्लोक आधा पढ़ा। उसका मतलब था—इस संसार में केवल तीन चीजें सार हैं।

ब्राह्मण ने सुना और उत्तर दिया, "हां, वे तीन चीजें हैं—काशीजी का वास, संतों की सेवा और भगवान की पूजा।"

ब्राह्मण के बाद उसकी पत्नी की बारी आई। राजा ने अब भी वही श्लोक पढ़ा। बुढ़िया बोली, "हां, वे तीन चीजें हैं—खाने के लिए मीठा मिला हुआ दही और पूजने के लिए भगवान के दो चरण।"

तीसरा नंबर था ब्राह्मण के बेटे का। राजा ने करवट बदली और पूछा, "दुनिया में ऐसी कौन-सी जगह है, जहां रहने में आदमी सुख मानता है?"

बेटे ने उत्तर दिया, "सुसराल। वहीं सुख का अनुभव होता है। इसीलिए तो शिव हिमालय पर रहते हैं और विष्णु क्षीरसागर में।"

आखिर में ब्राह्मण के बेटे की बहू का पहरा

आया। वह ठीक तरह से सो नहीं सकी थी। सारे सवाल-जवाब सुन रही थी। सोच रही थी कि यह लकड़हारा कौन है ? मामूली आदमी नहीं मालूम होता। हो-न-हो यह राजा भोज है, या उसकी सभा का कोई पंडित। तभी राजा ने शरारत से कहा, "असल में संसार का सार नारी है।"

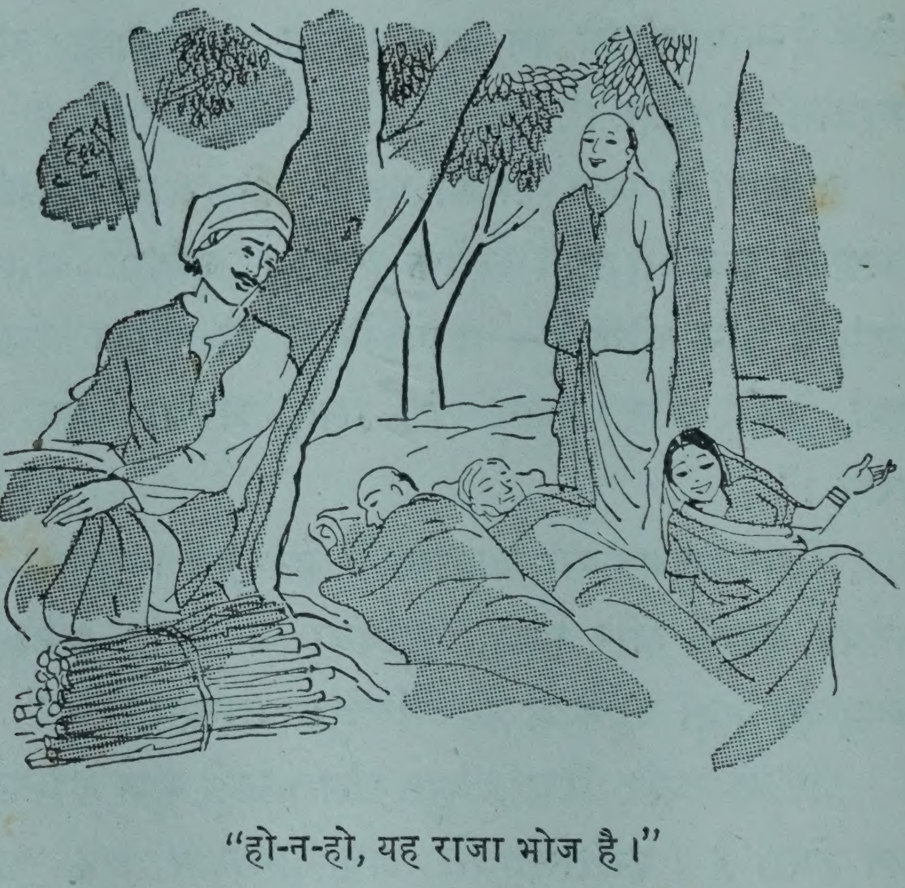

"हो-न-हो, यह राजा भोज है।"

बहू बोली, "आपने बिल्कुल ठीक कहा। अगर इस दुनिया में नारी न होती तो भोज जैसा दानी

ग्रौर गरीबों के दुःख दूर करनेवाला राजा दुनिया में कैसे ग्राता ?"

राजा पर घड़ों पानी पड़ गया। समझ गया कि इस चतुर नारी ने मुझे पहचान लिया है। मौका पाते ही वह वहां से चला गया।

दूसरे दिन ब्राह्मण राजधानी पहुंचा। राजा ने उसे बड़े ग्रादर के साथ ग्रपनी राजसभा में जगह दी ग्रौर उसके परिवार के लिए भी सब तरह की सुख-सुविधा कर दी।

× × ×

इसी तरह एक बार राजा भोज कवियों की चर्चा कर रहे थे। द्वारपाल ने ग्राकर कहा, "महाराज, एक ब्राह्मणी ग्रापसे मिलना चाहती है।"

महाराज ने कहा, "ग्रादर के साथ ले ग्राग्रो।"

उस समय विद्वान पुरुष संस्कृत में, नारियां ग्रौर साधारण पुरुष प्राकृत में कविता करते थे। प्राकृत जनसाधारण की भाषा थी। वह नारी कविता करती थी। जब वह वहां ग्राई तो राजा ने उसका बड़ा ग्रादर किया ग्रौर कहा, "माता, ग्राप तो कविता करती हैं। इस समस्या की पूर्ति कीजिये—

कंवण पियावऊं खीरु ? "अर्थात्—दूध किसे पिलाऊं।"

ब्राह्मणी ने सुनते ही एक दोहा पढ़ा—

"जइ यह रावण जाइयउ, दह मुंह इक्कु शरीरु।
जणणी विचम्भी चिन्तवइ कंवण पियावऊं खीरु।

"जब दस मुख और एक सिरवाला रावण पैदा हुआ तो उसकी माता घबरा गई। सोचने लगो कि इसके किस मुख से दूध पिलाऊं ?"

राजा यह सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने उस नारी को बहुत-सा धन दिया।

× × ×

एक बार एक गरीब ब्राह्मण सभा में आया। कविता में उसने एक सवाल किया, "मेरी मां न तो मुझसे खुश है, न मेरी घरवाली से। मेरी घरवाली का भी यही हाल है। वह मुझसे और मेरी मां से नाराज है। महाराज, यही हाल मेरा है। मैं अपनी मां और घरवाली दोनों से नाराज हूं। मतलब यह कि हम तीनों ही एक-दूसरे से खुश नहीं हैं। इसका कारण क्या है ? हम तीनों में दोषी कौन है ?"

राजा उसी समय अपने खजांची से बोले, "इस ब्राह्मण को दस हजार मोहरें दे दो।" फिर ब्राह्मण से

कहा, "जाओ ब्राह्मण देवता, अब तुम्हारे घर में झगड़ा नहीं होगा। गरीबी ही इसका कारण थी। मैंने उसे दूर कर दिया है।"

× × ×

एक बार राजा शिकार खेलने गये। वह हाथी पर सवार थे। लौटते समय उनकी नजर एक आदमी पर पड़ी। फसल कट चुकी थी। वह बचे हुए दाने बीन रहा था।

राजा ने ऊंची आवाज में कहा, "जो आदमी अपना पेट भी नहीं भर सका, उसके पैदा होने से क्या लाभ ?"

आदमी ने इस बात को सुना। बोला, "जिसको भगवान ने सबकुछ दिया है, वह भी दूसरों की मदद नहीं करता। उसके धरती पर पैदा होने से क्या लाभ ?"

राजा फिर बोला, "हे धरती माता, जो भीख मांगकर गुजारा करते हैं तू उनको पैदा न कर। वह तेरे ऊपर फालतू बोझ हैं।"

उस आदमी ने कहा, "हे धरती माता, गरीबों की ओर जो नहीं देखते, उन कंजूसों को तू क्यों पैदा करती है ? वे भी तेरे ऊपर बोझ हैं।"

राजा हाथी से नीचे उतर आया। समझ गया कि यह कोई साधारण आदमी नहीं है। पूछा, "कौन हो तुम ?"

उसने बताया कि वह शेखर नाम का कवि है। राजा की राह देखता यहां खड़ा था।

राजा बहुत खुश हुआ। उसे सदा की तरह बहुत-सा धन दिया।

× × ×

इन घटनाओं से मालूम होता है कि राजा भोज कैसे थे। वह अपने समय के बहुत बड़े राजा थे। उन्हें प्रजा से प्रेम था। वह बड़े वीर थे। कवि थे। ज्योतिष भी जानते थे। उनकी सभा विद्वानों से भरी रहती थी। वह भेस बदलकर अपनी प्रजा के बीच घूमा करते थे। वह देखते थे कि उनके कर्मचारी कहीं प्रजा को सताते तो नहीं हैं। वह चाहते थे कि उनके राज का हर आदमी पढ़ा-लिखा हो, गुणी हो। गांव-गांव और नगर-नगर में उन्होंने पाठशालाएं खुलवाई थीं। राजधानी में उन्होंने एक विश्वविद्यालय बनवाया था। उसका नाम भोजशाला था। महमूद गजनवी के साथ एक इतिहास-लेखक आया था। उसका नाम अलबरूनी था। उसने भारत के बारे में बहुत-सी बातें

लिखी हैं। उसीने लिखा है, "गुजरात के साथ मालवा नाम का राज्य है। वहां के महाराजा का नाम भोज है। उसके दरबार में ५०० विद्वान और कवि रहते हैं। वह उनकी तरह-तरह से परीक्षा लेता है। सारे देश में उसकी बुद्धि और दान-वीरता की कहानियां मशहूर हैं।"

यह बात ठीक है। ऊपर की कहानियां इस बात का सबूत हैं। आज भी बहुत-सी कहानियां हम सुनते हैं। उनमें से बहुत-सी कहानियां सही हैं। बहुत-सी लोगों ने अपने मन से घड़ ली हैं।

राजा भोज के भेष बदलकर घूमने से उनके कर्मचारी बहुत चौकन्ने रहते थे। वे जनता को कभी तंग नहीं करते थे। न जाने राजा किस भेस में छिपा हुआ उनको देख रहा हो। राजा यह जानते थे कि उनके पहरेदार बहुत-से लोगों को उनके पास नहीं आने देंगे। इसलिए उन्होंने दरबार में एक ऐसा समय रखा था, जब जो चाहे आ सकता था। उन्होंने दरबार के बाहर भी एक बहुत बड़ी शिला लगा दी थी। उसके नीचे खड़िया मिट्टी रखी रहती थी। कोई भी उसपर अपना सवाल लिख सकता था। राजा उसे पढ़ते और उसके नीचे उसका जवाब लिख देते।

एक दिन फटेहाल हाथ में खप्पर लिये एक भिखारी आगया। दरबारी उसे देखकर हँसने लगे। वे महाराज पर भी फब्तियां कसने लगे। राजा भोज मुस्कराए। भिखारी से बोले, "कहां से आ रहे हो, भाई ?"

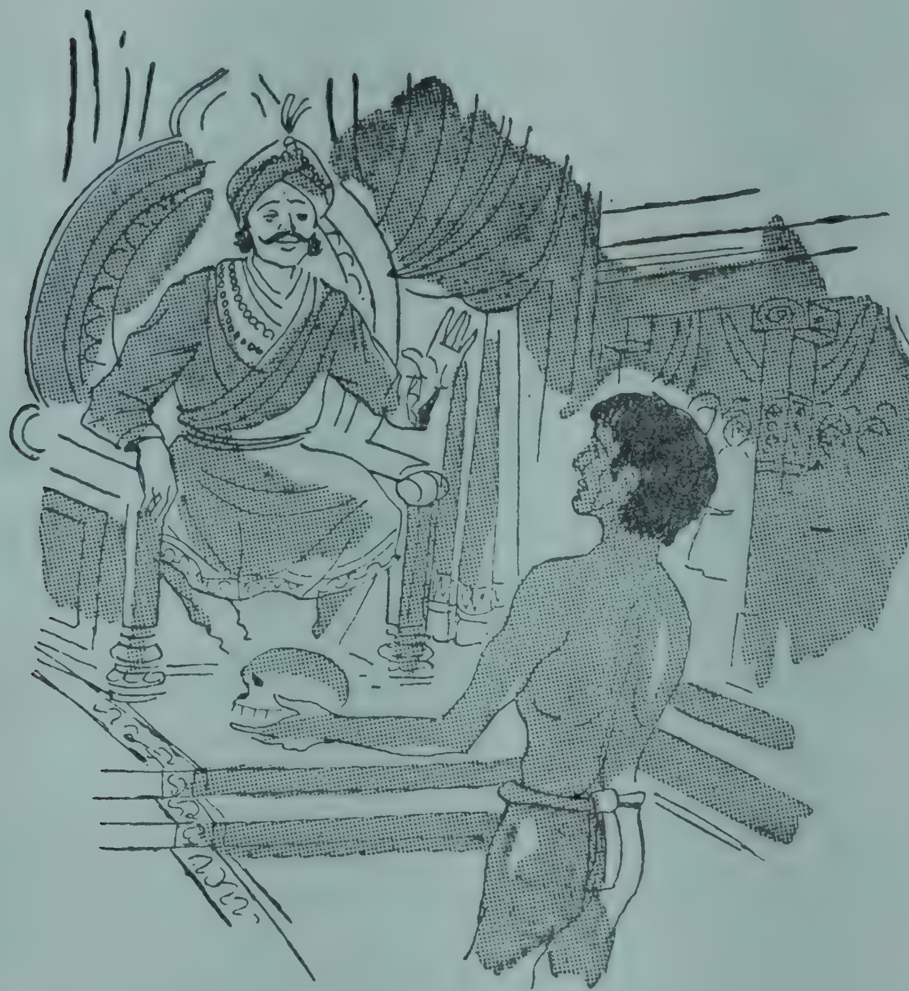

राज-दरबार में फटेहाल भिखारी

भिखारी ने कहा, "कैलास से।"

राजा ने पूछा, "सुनाओ, भगवान शिव तो प्रसन्न हैं।"

भिखारी ने जवाब दिया, "महाराज, यह सवाल ही नहीं उठता। वह तो कभी के मर गये हैं।"

यह सुनकर सभा चौंक पड़ी। सब एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। वे जानते थे कि राजा भोज शिव के परम उपासक हैं। जो आदमी शिव के लिए ऐसा कहता है, वह जान-बूझकर अपनी मौत बुलाता है।

पर महाराज को तनिक भी क्रोध नहीं आया उन्होंने अचरज से कहा, "शिव मर गये! कब मरे? हमें तो पता ही नहीं लगा।"

भिखारी बोला, "सैकड़ों वर्ष पहले मरना शुरू किया था। अब जाकर मर पाये हैं।"

राजा और भी चकित होकर बोले, "यह सब कैसे हुआ?"

भिखारी ने उत्तर दिया, "महाराज, उनका हरिहर रूप है। इस रूप में आधा शरीर तो विष्णु ले गये। दूसरा रूप उनका अर्धनारीश्वर है। इस तरह आधा शरीर पार्वतीजी ले गईं। शरीर बंट गया। बाद में दूसरे लोगों ने उनका धन और उनके गुण भी बांट लिये।"

मन-ही-मन महाराज बहुत खुश हुए। लेकिन पूछा, "यह धन और गुण बांटनेवाले कौन लोग हैं ?"

भिखारी ने नम्रता से कहा, "महाराज, चंद्रमा को आकाश ले गया। गंगा को धरती ले आई। शेष-नाग पाताल के हाथ लगा। बाकी रहे उनके गुण। उनमें से दानशीलता, वीरता और उदारता आप छीन लाये। अंत में रह गई उनके भीख मांगने की आदत। उसके लिए मैं घूम रहा हूं।"

यह कहानी सुनकर महाराज बहुत खुश हुए। उनके सामने वह दुबला, पतला, मरियल आदमी खड़ा था। उन्होंने सेवक से कहा, "जाओ इनको एक भैंस लाकर दो।"

सेवक वैसा ही था, जैसे राजा के सेवक होते हैं। तेली का तेल जले, मसालची का दिल जले। वह जाकर एक बूढ़ी और मरियल भैंस ले आया।

भिखारी भी चतुर था। वह अपना मुंह भैंस के कानों के पास ले गया, मानो उससे कुछ कहता हो। फिर अपना कान भैंस के मुंह से लगा दिया, मानो कुछ सुनता हो।

महाराज भी समझ गये। पूछा, "क्यों देवता, क्या पूछ रहे हो ?"

भिखारी ने कहा, "महाराज, कोई खास बात नहीं है।"

महाराज बोले, "फिर भी।"

उसने कहा, "महाराज, ग्रापने मुझे दुबला देखा। दूध पीने के लिए एक भैंस दी। पर इस भैंस को देखकर मुझे एक शक पैदा हुग्रा। शायद यह ग्रापके मन की इच्छा पूरी कर पाये या न कर पाये। सोचा चलो, इसीसे पूछ लो। मैंने यह बात पूछी थी कि वह मुझे ग्रौर मेरे घरवालों को दूध पिला सकेगी या नहीं ?"

महाराज बोले, "फिर क्या जवाब दिया इसने ?"

वह बोला, "महाराज, यह तो मुझपर बिगड़ पड़ी। कहती है, 'तुझे दिखाई नहीं देता। मेरे दांत झड़ गये हैं। सींग टूट गये हैं। खाल लटक ग्राई है। इसपर भी, मरे, तू चाहता है कि मैं तुझे दूध दूं।"

राजा सबकुछ समझ गये। उन्होंने सेवक को बहुत डांटा ग्रौर दरबार से निकाल दिया। भिखारी को एक हजार गायें ग्रौर भैंसें दान में मिलीं। राजा ने कहा, "जहांपर तुम रहते हो, उसके ग्रासपास कोई भी दुबला-पतला ग्रादमी नहीं रहना चाहिए। खूब दूध पिग्रो ग्रौर दूसरों को पिलाग्रो।"

इस तरह की घटनाएं उनके साथ हमेशा घटती रहती थीं। यही नहीं, राजा लोग भी एक-दूसरे की परीक्षा लेते रहते थे। गुजरात के राजा भीमदेव में और महाराज भोज में तो होड़-सी लगी रहती थी। गुजरात देश का एक राजदूत भोज की राजसभा में रहता था। उसका नाम दामोदर महता था। वह बहुत ही बुद्धिमान था। लेकिन वह बहुत बदसूरत भी था। राजा भोज में एक और गुण था। वह दूसरों से हँसी करते थे। दूसरे भी उनसे हँसी कर सकते थे। वह नाराज नहीं होते थे, चिढ़ते नहीं थे।

दामोदर महता जब पहली बार उनके दरबार में आया तो राजा उसे देखकर हँसे। बोले, "क्योंजी, तुम्हारे जैसे और कितने दूत तुम्हारे राजा के दरबार में हैं ?"

दामोदर महता भी कम चतुर नहीं था। बोला, "हमारे महाराज के तीन प्रकार के दूत हैं। सबसे अच्छे, अच्छे और नीच। जैसा राजा होता है वैसा ही दूत वहां भेजा जाता है। आप अपनेको देख लीजिये और समझ लीजिये कि मैं कैसा हूं। यदि आप अपने को बहुत अच्छा समझते हैं तो मैं भी बहुत अच्छा हूं। साधारण समझते हैं तो मैं भी साधारण हूं। नीच

समझते हैं तो मैं भी नीच हूं।" यह उत्तर सुनकर महाराज बहुत खुश हुए। उसी समय उसको १० हजार अशर्फियां इनाम में दीं।

× × ×

एक और कहानी है। एक बार राजा भोज ने राजा भीमदेव को लिखा--आप मुझे चार वस्तुएं भेज दें। पहली वह वस्तु, जिसे इस लोक में तो सुख है, लेकिन परलोक में नहीं। दूसरी वह, जिसे परलोक में तो सुख है, लेकिन इस लोक में नहीं है। तीसरी ऐसी जिसे इस लोक और परलोक दोनों में सुख है। चौथी वह जिसे इस लोक और परलोक, दोनों जगह ही सुख नहीं है।

राजा भीमदेव ने इस पत्र को अपनी सभा में पढ़ा। उनकी सभा में भी बहुत-से पंडित थे, लेकिन किसीको कुछ नहीं सूझा। यह देखकर महाराज बहुत दुखी हुए। उन्हें इस बात का दुःख था कि वह राजा भोज से हार जायंगे। इस बात को वह कैसे सह सकते थे? उनके दरबार में एक नाचनेवाली भी थी। जब सब पंडित हार गये तो उसने कहा, "महाराज, मैं इस बात का जवाब दे सकती हूं।"

उसके कहने पर महाराज भीमदेव ने राजा भोज

के पास ये चारों चीजें भेज दीं। वे थीं--एक पातुरी, एक तापस, एक दानी और एक जुआरी।

इन चारों को देखकर भोज बहुत खुश हुए। उनके सवालों का ठीक जवाब उन्हें मिल गया था। पातुरी को इस दुनिया में सब तरह के सुख मिलते हैं, लेकिन उसका परलोक बिगड़ जाता है। तापस इस दुनिया में सब तरह की मुसीबतें उठाता है, लेकिन उसका परलोक सुधर जाता है। दानी को यहां और वहां सब जगह सुख मिलता है। जुआरी यहां भी रोता रहता है और परलोक में भी उसको किसी तरह का सुख नहीं मिल सकता।

× × ×

राजा भोज के पास एक तोता था। उसको राजा ने यह रटा दिया "एक वस्तु अच्छी नहीं है।" एक दिन उस तोते को वह अपनी राजसभा में ले गये। राजा ने इशारा किया। वह तोता बार-बार उस वाक्य को पढ़ने लगा। सभा भरी हुई थी। एक-से-एक बढ़कर पंडित वहां मौजूद था।

राजा ने कहा, "यह तोता क्या कह रहा है? उसकी बात का जवाब क्यों नहीं देते? वह कौन-सी वस्तु है जो अच्छी नहीं है।"

पंडितों ने बार-बार इस सवाल का जवाब दिया। हर बार महाराज ने यही कहा, "नहीं, यह ठीक नहीं है।" जब सब परेशान हो गये, कोई भी ठीक उत्तर नहीं दे सका तो महाराज ने कहा, "मैं तुम लोगों को छः महीने का समय देता हूं। इस बीच मेरे सवाल का जवाब दो। नहीं दे सकोगे तो मैं सबको दरबार से निकाल दूंगा।"

यह सुनकर पंडित लोग और भी परेशान हो उठे। सोचने लगे "क्या किया जाय ?" सोचते-सोचते सब लोग वहां से उठकर इधर-उधर चले गये। इस सवाल का जवाब उन्हें ढूंढ़ना ही था। दरबार से निकलना उनका अपमान था। इस अपमान को वे कैसे सह सकते थे।

इन पंडितों में एक का नाम वररुचि था। वह पहुंचा हुआ पंडित था। वह भी इधर-उधर घूमने लगा। घूमते-घूमते उसकी भेंट एक चरवाहे से हो गई। दोनों इधर-उधर की बातें करने लगे। बातों के बीच में उसने अपने घूमने का कारण भी कह दिया।

वह बात सुनकर चरवाहा सहजभाव से बोला, "आप दुखी न हों। मुझे राजा के पास ले चलें। मैं उनके सवाल का जवाब दे सकता हूं। लेकिन मेरे

साथ एक परेशानी है। मेरे पास यह कुत्ता है। इसे मैं बहुत प्यार करता हूं। मैं इसे अपने से अलग नहीं कर सकता। इसे अपने साथ ले जाऊंगा।"

वररुचि ने कहा, "इसमें क्या बात हैं। ले चलिये।"

चरवाहा बोला, "बात तो है। मैं बूढ़ा हूं। इसे उठाकर नहीं चल सकता। अगर आप उठाकर ले चलें तो मैं चल सकता हूं।"

कुत्ता गंदा था। घाव भी उसके हो रहे थे। लेकिन पंडितजी क्या करते ? अपना मतलब था। उठाकर उसे कंधे पर बिठा लिया। फिर दोनों राजसभा की ओर चल पड़े।

महाराज को सूचना दी गई। उन्होंने दोनों को अंदर बुला लिया।

चरवाहे ने महाराज को प्रणाम किया और कहा, "मैं आपकी बात का जवाब देने आया हूं।"

महाराज ने पूछा, "क्या तुम जानते हो कि वह कौन-सी चीज है जो अच्छी नहीं है ?"

चरवाहे ने हाथ जोड़कर कहा, "मैं जानता हूं महाराज।"

महाराज बोले, "अच्छा बताओ।"

चरवाहे ने जवाब दिया, "महाराज दुनिया में

एक ही ऐसी चीज है, जो अच्छी नहीं है। वह है लोभ। आप उदाहरण चाहते हैं तो वह आपके सामने है। अपने पंडितजी को देखते हैं। आपने इनको राजसभा से निकाल देने की धमकी दी। इनको अपने अपमान का डर था, लेकिन इससे बड़ा एक और डर

वेदपाठी लोभी पंडित गले-सड़े कुत्ते को कंधे पर ले जाते हुए

था। आपके दरबार से इनको बहुत-सा धन मिलता है। वह भी बंद हो जाता। इस लोभ के कारण ये वेदपाठी पंडितजी मेरे गले-सड़े कुत्ते को कंधे पर उठाकर यहां लाये हैं। वैसे कुत्ते के छू जाने पर ये लोग नहाते हैं। इनको लोभ न होता तो यह इसे कभी

उठाकर न लाते । सो महाराज, मेरे विचार में तो लोभ ही एक ऐसी वस्तु है, जो अच्छी नहीं है ।"

महाराज बहुत खुश हुए । बोले, "ठीक है बाबा, मेरे सवाल का जवाब मिल गया ।" फिर उन्होंने खजांची को आज्ञा दी, "इस विद्वान चरवाहे को पांच सौ अशर्फियां दो और आदर के साथ इसे घर पर पहुंचा दो ।"

× × ×

एक बार महाराज भोज ने अपनी सभा में कहा, "गुजरात-नरेश भीमदेव के दरबार के पंडितों से मेरे दरबार के पंडित अधिक चतुर हैं ।"

गुजरात का राजदूत दामोदर महता वहां मौजूद ही था । वह इस बात को कैसे सह सकता था । बोला, "महाराज, आप पंडितों की बात करते हैं । हमारे देश के तो चरवाहे भी आपके पंडितों से अधिक चतुर हैं । हमारे दरबार की नाचनेवाली स्त्रियां हाजिर-जवाबी में सबके कान काटती हैं ।"

महाराज बोले, "अच्छा यह बात है तो उन्हें हमारे दरबार में बुलाओ ।"

राजदूत ने अपने महाराज को पत्र में सब बातें लिख भेजीं । महाराज भीमदेव ने चरवाहे के रूप में

एक पंडित को और सबसे अधिक हाजिरजवाब नाचनेवाली को भोज के दरबार में भेज दिया। दोनों दरबार में पहुंचे। राजा भोज ने दोनों को देखा।

उन्होंने पहले चरवाहे से सवाल किया, "बताओ मेरे गले में यह कंठा क्यों पड़ा है ?"

चरवाहे ने जवाब दिया, "महाराज, आपके दिल में लक्ष्मी रहती हैं और मुख में सरस्वती। इस कंठे को गले में पहनकर आपने इन दोनों के बीच में सीमा बना दी है। अब दोनों में झगड़ा नहीं हो सकता।"

राजा बहुत खुश हुए और उसे बहुत-सा धन इनाम में दिया। इसके बाद नाचनेवाली का नाच शुरू हुआ। नाच के बीच में एकाएक राजा ने उससे पूछा, "क्या करती हैं ?"

नाचनेवाली ने झट से जवाब दिया, "पूछती हैं।"

उसी समय महाराज खजांची की ओर मुड़े, बोले, "इसे तीन लाख अशर्फियां दो।" खजांची ने उनकी बात सुनी-अनसुनी कर दी। वह नाच के रस में डूबा हुआ था। तीन बार महाराज को उसे कहना पड़ा। इसका नतीजा यह हुआ कि खजांची को तीन लाख की जगह नौ लाख अशर्फियां उस नाचनेवाली को देनी पड़ीं।

सभा में बड़े-बड़े पंडित मौजूद थे। इस सवाल-जवाब से वे बड़े हैरान थे। कोई भी इसका मतलब नहीं समझ पाया। आखिर उन्होंने महाराज से पूछा। महाराज बोले, "जब यह नाच रही थी तब इसकी आंखों की कोर कानों तक फैल रही थी। यह देखकर मैंने इससे पूछा, "तुम्हारी ये आंखें क्या करती हैं ?" यह तो हुआ मेरे सवाल का मतलब। अब नाचनेवाली ने जो जवाब दिया, उसका क्या मतलब है, यह उसीसे पूछो।"

पंडितों के पूछने पर नाचनेवाली ने कहा, "महाराज का सवाल सुनकर मैंने जवाब दिया था—'पूछती हैं।' इसका मतलब यह है कि मेरी आंखें मेरे कानों के पास जाकर यह पूछती हैं कि तुमने जिन महाराज भोज का यश सुन रखा है, हम उनको ही देख रही हैं या किसी दूसरे को ? इसपर कानों ने जवाब दिया, 'हमने जिनका यश सुना है और तुम जिनको देख रही हो वह यही राजा भोज हैं'।"

नाचनेवाली का जवाब सुनकर सारी सभा वाह-वाह कर उठी।

× × ×

राजा भोज के समय की ये कथाएं संस्कृत-साहित्य

में भरी पड़ी हैं। उस समय लोग राजा भोज की तारीफ भी घुमा-फिराकर किया करते थे। सीधी-सादी बात तो कोई करता ही नहीं था। सब जातियों के लोग पढ़े-लिखे थे, चतुर थे। पंडित का मतलब ब्राह्मण नहीं है। जिन जातियों को आज हम छोटा समझते हैं उन जातियों के लोग भी उस समय बड़े पंडित थे। एक बार की बात है कि उनके पहरेदार ने महाराज को सूचना दी, "महाराज, एक कुम्हारिन आपसे मिलना चाहती है।"

राजा ने कहा, "उससे पूछो कि वह क्या चाहती है?"

पहरेदार बोला, "महाराज, मैंने उससे बहुत पूछा, पर वह मुझे कुछ नहीं बताती। कहती है कि महाराज के सामने ही मन की बात कहूंगी।"

महाराज बोले, "ऐसा है तो उसे यहां भेज दो।"

कुम्हारिन महाराज के सामने पहुंची। उनको प्रणाम किया।

महाराज बोले, "क्यों देवी, क्या कहती हो?"

कुम्हारिन बोली, "महाराज, मेरा पति बर्तन बनाता है। उसीके लिए वह जंगल में मिट्टी खोद रहा था। खोदते-खोदते मणियों से भरा हुआ एक देग

मिला। मेरा पति वहां बैठा उसकी देखभाल कर रहा है। मैं आपके पास सूचना देने आई हूं। किसीको भेजकर आप उस देग को मंगवा लीजिये।"

यह सुनकर महाराज मन-ही-मन बहुत खुश हुए। उन्होंने सिपाहियों को आज्ञा दी कि देगसहित कुम्हार को भी दरबार में बुला लाओ। थोड़ी देर में सिपाही

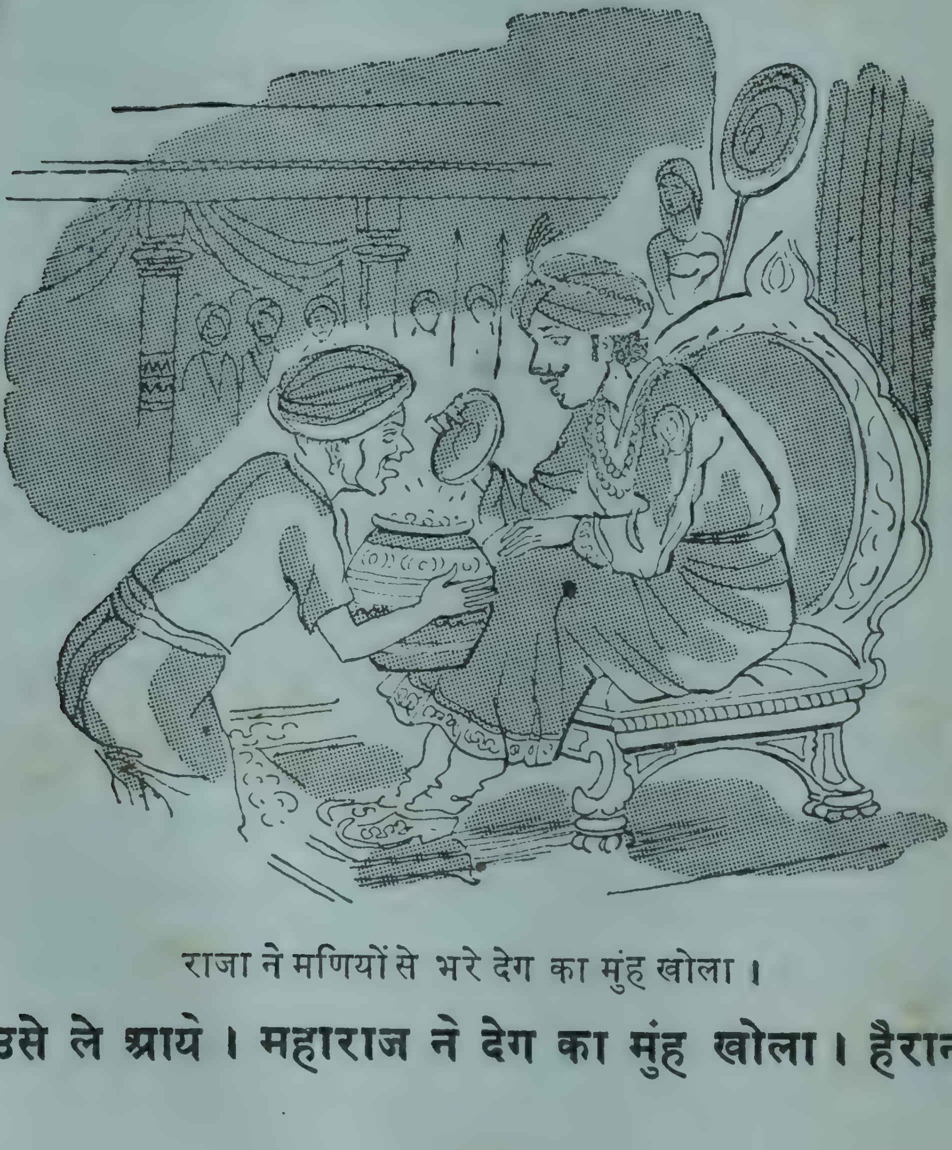

राजा ने मणियों से भरे देग का मुंह खोला।

उसे ले आये। महाराज ने देग का मुंह खोला। हैरान

रह गये । मणियां चमक रही थीं ।

उन्होंने कुम्हार से पूछा, "यह सब क्या है ?

कुम्हार चतुर था। महाराज का मतलब समझ गया । तुरंत बोला, "मेरे विचार में तो ये सब आकाश के तारे हैं, महाराज ।"

राजा हँसे, "क्या ? आकाश के तारे ! वे धरती पर किस कारण आये हें ?"

कुम्हार ने जवाब दिया, "महाराज आकाश का चांद धरती पर आगया है, इसलिए ये तारे धरती पर आगये हैं ।"

चांद से उसका मतलब महाराज भोज से था। महाराज उसकी ईमानदारी पर पहले ही खुश थे, उसकी चतुरता देखकर तो फूल उठे । मणियों से भरा वह देग उसीको इनाम में दे दिया ।

× × ×

एक दिन राजा मामूली आदमी का भेस बनाये बाग में घूम रहे थे। देखा सामने से एक तिलकधारी आ रहा है । उसके हाथ में चमड़े का कमंडल है ।

राजा ने उसे रोककर पूछा, "ब्राह्मण हो ?"

उस आदमी ने कहा, "जी हां ।"

राजा ने कहा, "चमड़े का कमंडल लेकर घूमते

हुए लज्जा नहीं आती ?

आदमी बोला, "और किस चीज का कमंडल लेकर चलूं। तुम्हीं बता दो।"

राजा ने कहा, "लोहे का या तांबे का।"

वह आदमी बोला, "पागल हुए हो। राजा भोज के राज में लोहा और तांबा बचा ही कहां है।"

राजा ने पूछा, "क्यों लोहे और तांबे का क्या हुआ ?"

वह आदमी बोला, "महाराज ने शत्रुओं के बंधवाने के लिए लोहे की जंजीरें बनवा डाली हैं। दान देने के लिए तांबे के दानपत्र बन गये हैं। इन दोनों कामों से लोहा और तांबा बचे तो कमंडल बने। अब तुम्हीं बताओ मैं चमड़े का कमंडल नहीं लूं तो क्या करूं ?"

वह आदमी चतुर था। पहले ही जान गया था कि वह राजा भोज से बात कर रहा है। इसलिए उसने बड़े ढंग से राजा की वीरता और दानशीलता दोनों की तारीफ की और अपनी गरीबी को छिपा लिया। राजा बहुत खुश हुए। उन्होंने उसे सोने का कमंडल बनवाकर दिया।

× × ×

इन कहानियों का यह मतलब नहीं है कि वह

केवल चतुराई की बातों को प्यार करते थे। नहीं, वह बहुत बड़े राजा थे। उन्होंने प्रजा के लिए बहुत काम किया है। विंध्याचल के पहाड़ों में भोपाल के पास उन्होंने एक बहुत बड़ी झील बनवाई थी। वह २५० वर्गमील फैली हुई थी। उसके निशान आज भी वहां मौजूद हैं। उन्होंने अपनी 'भोजशाला' पाठशाला के लिए सरस्वती की एक विशाल मूर्ति बनवाई थी। वह मूर्ति आज भी लंदन के संग्रहालय में रखी हुई है। इससे पता लगता है कि उन्हें कला से भी प्रेम था और वह जनता की भलाई के लिए बहुत-से काम किया करते थे।

हमारे देश में एक कहावत है, 'कहां राजा भोज और कहां गंगवा तेली।' इस कहावत का गंगवा तेली से कोई संबंध नहीं है। आज इस कहावत का रूप बिगड़ गया है। बात असल में यह है कि उनके समय में हैहय-वंशी राजा गांगेय देव और तैलब-वंशी राजा जयसिंह तैलब राज कहते थे। उन दोनों से राजा भोज की लड़ाई हुई थी और उन दोनों को राजा भोज ने हराया था। तभी कहावत बनी थी। वह कहावत यों थी—"कहां राजा भोज और कहां गांगेय और तैलब।" बिगड़ते-बिगड़ते गांगेय का गंगवा और तैलब

GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162, RAMAVILAS ROAD
MYSORE-1
1607

का तैली बन गया।

राजा भोज संवत् १०६६ में मालव देश के राजा हुए। इस समय इनकी उम्र बीस साल की थी। लगभग ५५ वर्ष तक उन्होंने इतनी अच्छी तरह से राज किया कि उनका नाम अमर होगया। उनकी कहानियां लोगों की जबान पर हैं।

ಕರ್ನಾಟಕ ಗಾಂಧೀ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ (ರಿ)
ಪರಿಗ್ರಹಣ ಸಂಖ್ಯೆ:
ACC. No.: 9649
ಗಾಂಧೀ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

समाज विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

४७

सस्ता साहित्य मण्डल

सैंतीस नये पैसे